Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

समस्तीपुर जिला में कृषि विकास की संभावनाएँ

पिंकी कुमारी[1], डॉ. शीला कुमारी [2]

[1]शोध छात्रा, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

[2]वरीय सहायक, प्राध्यापक, राममनोहर लोहिया स्मारक महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Email: pinkyrr1432@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171225
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 118-120
December 2025

Submitted: 17 Nov. 2025
Revised: 27 Nov. 2025
Accepted: 12 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सार संक्षेप

समस्तीपुर जिला, बिहार राज्य के उत्तरी भाग में स्थित एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की जलवायु, उपजाऊ गंगा का मैदान तथा पर्याप्त जल संसाधन इसे कृषि के लिए अनुकूल बनाते हैं। जिला की अधिकांश जनसंख्या परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। यहाँ की कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं जिला में कृषि उत्पादकता बढ़ने हेतु खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को विकसित करने तथा कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा योजनाएं बनायी जा रही हैं। जैविक कृषि के द्वारा किसानों को नई कृषि शिक्षा, आधुनिक कृषि यंत्र आदि को बढ़ावा मिलने से जिला में विकास की अपार संभावनाएं विकसित हुई है। प्रस्तुत शोध में कृषि विकास की संभावनाओं पर विचार प्रस्तुत किया जायेगा।

शब्द कुँजी: *कृषि, विकास, जैविक, कृषि यंत्र आदि।*

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय

समस्तीपुर जिला बिहार राज्य के तिरहुत प्रमंडल का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह जिला प्राकृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत उपजाऊ तथा कृषि के लिए उपयुक्त है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25°35′ उत्तरी अक्षांश से 25°57′ उत्तरी अक्षांश तथा 85°40′ देशांतर से 86°16′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल 2904 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में दरभंगा एवं मुजफ्फरपुर जिला तथा दक्षिण में गंगा नदी एवं पटना जिला स्थित है। इसके पूर्व में खगड़िया तथा बेगूसराय तथा पश्चिम में वैशाली जिला स्थित है। यहाँ की भूमि गंगा, बागमती, बुढी गंडक, कमला और अन्य सहायक नदियों द्वारा सिंचित है। इस जिला में धान, गेहूँ, मक्का, दलहन, सब्जी, तेलहन आदि की खेती की जाती है। इसके साथ हल्दी, आलू, तम्बाकू, मिर्चा की खेती के लिए यह जिला प्रसिद्ध है। यहां की सरैसा खैनी विश्व प्रसिद्द है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य समस्तीपुर जिला की भौगोलिक व कृषि परिस्थितियों का अध्ययन करना, वर्तमान कृषि प्रणाली एवं फसलों की उत्पादकता का विश्लेषण करना। कृषि में आ रही चुनौतियों की पहचान कर समाधान प्रस्तुत करना, कृषि तकनीक, बाजार और नीतिगत सुधारों की भूमिका समझना तथा कृषि विकास हेतु संभावित उपायों का सुझाव देना है।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक डाटा एवं द्वितीयक डाटा का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक आंकड़ा के अन्तर्गत आवश्यकतानुसार किसानों से प्रश्नावली व साक्षात्कार ली जायेगी। क्षेत्र भ्रमण कर स्थानीय कृषि विभाग के समस्त अधिकारियों के साथ बातचीत की जायेगी, जिसमें शोध के उद्देश्य को पूर्ण किया जा सके।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
पिंकी कुमारी, शोध छात्रा, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

How to cite this article:
कुमारी, . पिंकी ., & कुमारी, . शीला . (2025). समस्तीपुर जिला में कृषि विकास की संभावनाएँ. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 118–120. https://doi.org/10.5281/zenodo.18184822

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18184822
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

द्वितीयक आंकड़ा के अंतगर्त कृषि विभाग की रिपोर्ट, जनगणना एवं आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट, शोध पत्र, लेख, सरकारी योजनाएं एवं नीतियां तथा बिहार राज्य कृषि विश्वविद्यालय पूसा की रिपोर्ट से सहायता ली जायेगी।

परिचय

शोध जिला की भूमि गंगा एवं इसका सहायक नदियां द्वारा सिंचित है, जिससे मृदा अत्यंत उपजाऊ है। यहाँ की जलवायु गर्मी में गर्म तथा सर्दी में ठंडी होती है जो विविध प्रकार के फसलों के लिए अनुकूल है। वर्षा सामान्यतः पर्याप्त होती है जो खरीफ फसलों के लिए लाभकारी है। जिला में मुख्य रूप से धान, गेहूं, मक्का, दलहन और तिलहन की खेती की जाति है। इसके अतिरिक्त सब्जियां और फलें जैसे केला, आम और लीची की भी खेती होती है। हसनपुर, सिधिया और विभूतिपुर जैसे प्रखंडों में बागवानी कृषि विकास की ओर अग्रसर है। इतना ही नहीं जिला में मिर्चा, तम्बाकू की खेती भी अच्छी तरह से हो रही है। यह जिला मिर्चा एवं तम्बाकू उत्पादन में बिहार में स्थान रखता है। आलू एवं हल्दी के उत्पादन में यह जिला भारत में स्थान रखता है। आलू के उत्पादन एवं विकास के लिए कोल्ड स्टोरेज पर्याप्त संख्या में लगाया जा सकता है। यहाँ कोल्ड स्टोरेज भी 62 एवं 40 के लगभग है। यहाँ के लोग परिश्रमी हैं, जिससे कृषि के क्षेत्र में विकास हो रहा हैं। शोध जिला में नवाचार और आधुनिक तकनीकी प्रगति के कारण कृषि विकास की संभावनाएँ अत्यंत विकासन्मुख हैं। सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के फलस्वरूप कृषि का विकास हो रहा है। हालांकि सभी क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। फिर भी पम्पिंग सेट, नलकूप के विकास के कारण सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो पायी है इसमें महत्वपूर्ण योगदान विधुत विभागऔर बिहार सरकार का है जो कृषि हेतु अलग से विधुत उपलब्ध कराती है जिससे सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, तम्बाकू, मिर्चा आदि के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिली है। यह क्षेत्र कृषि के विकास में नया आयाम साबित कर रहा है, यदि ड्रीप सिंचाई, स्पम्लर सिंचाई और अति आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा मिले तो कृषि उत्पादन में काफी वृद्धि हो सकती

यह सर्वविदित है कि हरित क्रांति के बाद कृषि में रासायनिक खाद, उर्वरक, कीटनाशक दवा का प्रयोग बहुत हुआ है। जनसंख्या की आवश्यकता को पूरा करने में मानव खेतों को बंजर बनाने पर उतारू है। खेत बंजर होते जा रहे है। मिट्टी की उर्वरता शक्ति घटती जा रही है। इसके लिए यदि जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाये तो कृषि के क्षेत्र में मिल का पत्थर साबित होगा। जैविक कृषि से खेती की उर्वरता शक्ति बरकरार रहेगी तथा फसल संरक्षण के साथ – साथ फसल की गुणवत्ता भी बरकरार रहेगी। जैविक फसल चाहे वह खाद्यान हो या सब्जी मानव के स्वस्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता है। जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए तो शोध जिला समस्तीपुर में कृषि के नए आयाम स्थापित होंगे। जैविक कृषि के साथ - साथ कृषि यंत्रीकरण भी कृषि के विकास में अहम भूमिका निभाता है। जैसे वर्तमान में आधुनिक कृषि यंत्रों का इस्तेमाल जैसे ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर या अन्य यंत्रों की उपलब्धता से कृषि करने में सुविधा होगी। किसान का समय तथा श्रम दोनों की बचत होगी। परम्परागत कृषि यंत्र जैसे हल, कुदाल आदि से कृषि संभव नहीं है। इसमें समय और श्रम अधिक लगता है। ऐसी स्थिति में जिला में यंत्रीकरण का विकास कर दिया जाए और किसानों को आधुनिक कृषि यंत्र उपलब्ध करा दिया जाए तो कृषि के क्षेत्र में विकास की संभावनाएँ अधिक हों जाएगी। फसलों का उत्पादन अधिक होगा, किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जब किसान खुशहाल होगा, तब राज्य, देश खुशहाल होगा।

कृषि के क्षेत्र में विकास हेतु उन्नत, खाद, बीज, कृषि यंत्र के साथ-साथ यदि किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण दी जाए तो यह शोध जिला में कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अधिकतर किसान जो अशिक्षित परम्परागत खेती करना चाहते हैं, जिससे भूमि की पैदावार कम होती है। यदि उन्हें कृषि शिक्षा एवं प्रशिक्षण दी जाए तो कृषि के क्षेत्र में विकास की धारा बहेंगी। इसके लिए पूसा कृषि विश्वविद्यालय समय–समय पर किसानों के लिए कृषि शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रहा है। ताकि किसान उन्नत बीज, मृदा परिक्षण, कीट नियंत्रण तथा जैविक कृषि के बारे में जानकारी प्राप्त कर कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

शोध जिला में कृषि के विकास हेतु बाजार तथा कृषि आधारित उद्योगों की संभावनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि स्थानीय स्तर पर कोल्ड स्टोरेज, फ़ूड प्रोसेसिंग यूनिट और कृषि उत्पाद विपणन केंद्र की स्थापना किया जाए तो किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सकता है उन्हें बिचौलियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा और किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी। ऐसा देखा जाता है कि फसल उत्पादन के समय पर किसान उत्पाद को औने – पौने भाव पर बेचने को मजबूर होते है या बिचौलिया के द्वारा बेचते है। वैसी स्थिति में शोध जिला में कोल्ड स्टोरेज, फ़ूड प्रोसेसिंग यूनिट, और कृषि उत्पाद विपणन केंद्रों की स्थापना की जाये तो किसानों की माली हालत में सुधार होगा, उसके फसल उत्पादन का सही मूल्य मिल सकेगा। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी जिससे यह क्षेत्र कृषि विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा।

जिला में कृषि विकास हेतु सरकारी योजनाएँ और सहकारिता मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका है। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही है। योजनाएँ जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, कृषि यंत्रीकरण योजना, फसल बीमा योजना आदि किसानों तक पहुचे तो कृषि विकास में तेजी लाई जा सकेगी। साथ ही सहकारी समितियों के योगदान के फलस्वरूप कृषि के क्षेत्रों में विकास की जा सकती है। इसके लिए सहकारी समितियों एवं किसान उत्पादक संगठन (FPO) की भूमिका अहम होती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध जिला में कृषि विकास की अपार संभावनाएँ हैं। यदि आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिकों तथा सरकारी योजनाओं का समुचित रूप से लागू की जाए तो यह क्षेत्र राज्य ही नहीं देश के कृषि मानचित्र पर एक आदर्श विकसित जिला का उदाहरण बन सकता है। इसके लिए सरकार, कृषि वैज्ञानिक, बैंकिंग तो सरकारी तंत्र तथा समाज के सभी वर्गों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस जिला का विकास को अपार संभावनाओं हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं –

सुझाव –

(i) कृषि आधारित लघु उद्योगों का स्थापना

(ii) बाजार व्यवस्था एवं मूल्य निर्धारण प्रणाली की व्यवस्था करना

(iii) आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण

(iv) सरकारी योजनाओं का जमीनी क्रियान्वयन की निगरानी रखना

(v) युवाओं को कृषि में आकर्षित करने के लिए स्टार्ट अप सहयोग

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, ब्रज भूषण (1979), कृषि भूगोल, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।
2. सिन्हा, विश्वनाथ प्रसाद, नाजिम मोहम्मद, बिहार का भूगोल, 2014, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।
4. समस्तीपुर का जिला गजेटियर।
5. कृषि विज्ञान केन्द्र, समस्तीपुर।
6. पूर्ववती शोध एवं आलेख।
7. बिहार राज्य कृषि विभाग का आकड़ा।